

## Padma Shri



### **SHRI JORDEN LEPCHA**

Shri Jordan Lepcha is a famous bamboo craftsman from Sikkim.

2. Born on 28<sup>th</sup> July, 1971, in the serene village of Rubeyam Ram, nestled amidst the stunning landscapes of Dzongu, Mangan District, Sikkim, Shri Lepcha's early years were shaped by the teachings of his parents who introduced him to the art of bamboo crafting.

3. Driven by a deep passion to revive ancient traditions, Shri Lepcha immersed himself in mastering the intricate techniques of crafting Lepcha hats, known as Thyaktuks. The pivotal moment came in 1997 when he participated in a six-month training program for traditional hat weaving organized by the Government of Sikkim's Industry department. Despite facing challenges in selling his creations initially, he persevered, taking on additional jobs to support his family while honing his craft.

4. In 2005, Shri Lepcha began sharing his knowledge and skills by conducting training sessions for aspiring artisans in Gangtok, summoned by the Directorate of Handicrafts & Handlooms (Govt. of Sikkim). His commitment extended to offering free training sessions at his own residence, empowering individuals to embrace and propagate the ancient craft of Lepcha hat weaving.

5. Shri Lepcha's legacy goes beyond individual accomplishments; it's about the impact one person can have in preserving and perpetuating cultural traditions. Through his efforts, he has not only safeguarded a cherished cultural heritage but also empowered countless individuals to embrace their heritage and sustain themselves through craftsmanship.

6. Through dedication and hard work, Shri Lepcha's expertise gained recognition, earning him accolades such as a Certificate of Merit from the Ministry of Textile (Government of India) and the esteemed title of Master Craftsman for the State of Sikkim. But beyond personal achievements, his journey has always been about giving back to his community and preserving their cultural legacy.

## पद्म श्री



### श्री जोरदेन लेप्चा

श्री जोरदेन लेप्चा सिक्किम के प्रसिद्ध बांस शिल्पी हैं।

2. श्री लेप्चा का जन्म 28 जुलाई, 1971 को सिक्किम के मंगन जिले के जोंगु के मनोरम परिवेश के बीच बसे एक शांत गाँव रुबेयम राम में हुआ। श्री लेप्चा को बचपन में उनके माता-पिता ने शिक्षाएं दी और उन्हें बांस शिल्पकला से परिचित कराया।
3. श्री लेप्चा ने, प्राचीन परंपराओं को पुनर्जीवित करने के अपने गहरे जुनून के कारण, लेप्चा टोपियाँ, जिन्हें थायक्तुक्स के नाम से जाना जाता है, बनाने की जटिल तकनीकों में महारत हासिल की। 1997 में उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया, जब उन्होंने सिक्किम सरकार के उद्योग विभाग द्वारा आयोजित पारंपरिक टोपी बुनाई के छह महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। शुरुआत में अपनी टोपियों को बेचने में आई चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने लगन से अपनी कला को निखारते हुए, अपने परिवार की मदद के लिए अतिरिक्त काम किया।
4. 2005 में श्री लेप्चा ने हस्तशिल्प और हथकरघा निदेशालय ( सिक्किम सरकार) द्वारा गंगटोक में बुलाए गए इच्छुक कारीगरों के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित करके अपने ज्ञान और कौशल को साझा करना शुरू किया। उन्होंने प्रतिबद्ध होकर अपने घर पर मुफ्त प्रशिक्षण सत्र की पेशकश की, व्यक्तियों को लेप्चा टोपी बुनाई की प्राचीन कला को अपनाने और प्रचारित करने के लिए सशक्त बनाया है।
5. श्री लेप्चा की विरासत व्यक्तिगत उपलब्धियों से परे है। यह सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित और कायम रखने में एक व्यक्ति की भूमिका के बारे में है। अपने प्रयासों के माध्यम से, उन्होंने न केवल एक गौरवपूर्ण सांस्कृतिक विरासत की रक्षा की है, बल्कि अनगिनत व्यक्तियों को इस विरासत को अपनाने और शिल्प कौशल के माध्यम से स्वयं के भरण-पोषण के लिए सशक्त बनाया है।
6. समर्पण और कड़ी मेहनत के जरिए, श्री लेप्चा की विशेषज्ञता को पहचान मिली, जिससे उन्हें वस्त्र मंत्रालय (भारत सरकार) से मेरिट सर्टिफिकेट और सिक्किम राज्य की ओर से मास्टर क्राफ्ट्समैन की प्रतिष्ठित उपाधि प्राप्त हुई। लेकिन व्यक्तिगत उपलब्धियों से परे, उनकी जीवन यात्रा हमेशा अपने समुदाय की भलाई और उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के बारे में रही है।